विचार बिन्दु

निरंतर विकास जीवन का एक नियम है। और जो भी व्यक्ति खुद को सही दिखाने के लिए अपनी रूढ़िवादिता को बरकरार रखने की कोशिश करता है वो खुद को एक गलत स्थिति में पंहुचा देता है। –महात्मा गांधी

नई सरकार से राज्य की जनता क्या अपेक्षा रख सकती है!

जिन मुद्दों पर प्रधान मंत्री सहित सभी भाजपा नेताओं ने विधानसभा चुनाव प्रचार के दौरान अशोक गहलोत के नेतृत्व वाली कांग्रेस सरकार को जाम कर कोसा था, मतदाताओं के मन में उसके खिलाफ माहौल बनाया था उन पर अब नई सरकार की कसौटी होगी। कसौटी का पैमाना खुद भाजपा के नेताओं ने बनाया है जो राज्य के प्रशासन की बागडोर थामने वाले हैं। यह पैमाना राहतें लुटाने का नहीं बल्कि ऐसा साफ सुथरा शासन तंत्र देने का होगा जिसमें बिना किसी बिचौलिये के शासन और आम जन के बीच सीधा संवाद की अपेक्षा होगी। इसके लिए शासन के शीर्ष नेतृत्व को अपने को सचिवालय में मुख्यमंत्री के कार्यालय (सीएमओ) और मुख्यमंत्री के निवास ओर मुख्यमंत्री के कार्यालय (सीएमआर) की मोटी दीवारों की जद और घेरेबंदी से अपने को मुक्त करना होगा। प्रशासन को जनता के द्वार भेजने के ढोंग करने की बजाय उसके कर्मियों की आदत डालनी होगी कि वे अपने-अपने ऑफिसों में पूरे समय बैठ कर जनता के काम शीघ्रता और निपुणता से निपटाएं। शासन के क़िले की सारी खिड़कियां ही नहीं खोलनी होगी बल्कि उन्हें पारदर्शी भी बनाना होगा। सचिवालय के ठस दिमागों को झकझोरना होगा और बाहर से आने वाले जनहित के विचारों पर ईमानदारी से गौर करना सीखना होगा। सत्ता में बैठने वालों को अपने को बार-बार याद दिलाते रहना होगा कि वे जनता के प्रतिनिधि हैं मालिक नहीं। इसके लिए उन्हें महत्वपूर्ण मुद्दों पर खुद जनता से लगातार संवाद करते रहना होगा। सत्ता में बैठने वाले राजनेताओं को अपनी पार्टी के छोटे और मंझले स्तर के कार्यकर्ताओं की ही नहीं सभी वर्गों के प्रतिनिधियों की अपने तक पहुंच सुगम बनाए रखनी होगी और उनकी बातों को गौर से सुनना होगा, समझना होगा। सत्ता के पदों पर आसीन होने वाले राजनेताओं की यह कसौटी भी होगी कि वे अपनी सनकों का नहीं कानून के राज की स्थापना करें। सभी यह चाहेंगे कि नई सरकार आम जन में पैठ गई इस अवधारणा कि राज में चहुं ओर लूट ही लूट है को तोड़े ओर राज्य की अर्थव्यवस्था को फिर से पटरी पर लाने के प्रयास शुरू करे। हाल के दिनों में राजस्थान में संगठित अपराधी गिरोहों के भयावह कारनामे सामने आये हैं, चाहे वे भू माफियाओं द्वारा हत्याएं कराए जाना हो या शिक्षा माफियॉन द्वारा प्रतियोगी परीक्षाओं के प्रश्नपत्र लीक कराया जाना हो। इन गिरोहों को राजनेताओं और विभिन्न समुदायों से मिल रहे समर्थन को ध्वस्त करने के लिए राजनैतिक इच्छाशक्ति का ठोस प्रदर्शन करके नई सरकार के नियंताओं को अपने ही घोषित पैमाने पर खरा उतरने का प्रदर्शन करना होगा। नये निजाम में सिर्फ राजनैतिक नेतृत्व बदला है प्रशासन का तंत्र नहीं बदला है। नीचे सबसे छोटे बाबू से लेकर सबसे ऊपर मुख्य सचिव तक और सबसे छोटे सिपाही से लेकर पुलिस महानिदेशक तक की व्यवस्था वही की वही है। प्रशासन तंत्र राजनेताओं की लूट का जरिया न बन कर लोक कल्याणकारी कार्यक्रमों को ईमानदारी और मेहनत से जमीनी स्तर पर लागू करे इसे सुनिश्चित करने से ही यह संभव हो सकता है। शासन के नये कर्ता-धर्ताओं को यह बात स्पष्ट रूप से पहले दिन से ही समझ लेनी होगी कि प्रशासनिक व्यवस्था अच्छी है या बुरी उसे के आधार पर मतदाता चुनावों में अपना मन बनाते हैं और सरकारें बनाने और गिराने के परिणाम देते हैं। प्रशासन तंत्र को राजनेताओं या अधिकारियों की सनकों के आधार पर चलाने से पार्टियां सत्ताच्युत होती हैं और समाज में बेचैनी पैदा होती है। भारतीय संविधान को शासन का पवित्र धर्मग्रंथ मान कर चलने से ही सहभागी लोकतंत्र की व्यवस्था मजबूत होती है, जिस पर नये विधि निर्माताओं को चलना है। संविधान कोरा एक बड़ा ग्रंथ नहीं है जिसे संविधान सभा में उसके सदस्यों ने कुल 2 वर्ष, 11 माह, 18 दिन में 165 बैठकें करके गहरे और लंबे विमर्शों के बाद अपनाया। वह सजा कर अलमारी में रखने वाली किताब भी नहीं है। संविधान एक जीवंत दस्तावेज है जिसके आधार पर हम समानता और न्याय पर आधारित अपने शासन और प्रशासन तंत्र की व्यवस्था करते हैं। यह मान लेना भूल होगी कि संविधान की प्रस्तावना की पंक्तियों को फ्रेम करके रख देने से लोकतंत्र सम्पूर्ण हो जाता है। देश के शासन तंत्र को चलाने के लिए जिस प्रकार की राज व्यवस्था संविधान ने दी उसकी बारीकियों में जाकर ही देश को गणतांत्रिक तरीके से चलाया जा सकता है। संविधान के प्रावधानों को अपने व्यवहार में लाकर उसके अनुरूप चलने से ही लोकतंत्र बना रह सकता है। इसीलिए राजस्थान में नई सरकार से इस समझदारी की अपेक्षा होगी कि वह सरकारी और स्वायत्तशाषी संस्थाओं को संकुचित दृष्टि से न देख कर उन्हें मजबूत और सर्वग्राही बनाए और उन्हें किन्हीं लोगों को समायोजित करने के स्थान न माने। भारत का संविधान बनाने वाली सभा के सदस्य विभिन्न पृष्ठभूमि और सामाजिक स्तरों से आए थे।

नये निजाम में सिर्फ राजनैतिक नेतृत्व बदला है प्रशासन का तंत्र नहीं बदला है। नीचे सबसे छोटे बाबू से लेकर सबसे ऊपर मुख्य सचिव तक और सबसे छोटे सिपाही से लेकर पुलिस महानिदेशक तक की व्यवस्था वही की वही है। प्रशासन तंत्र राजनेताओं की लूट का जरिया न बन कर लोक कल्याणकारी कार्यक्रमों को ईमानदारी और मेहनत से जमीनी स्तर पर लागू करे इसे सुनिश्चित करने से ही यह संभव हो सकता है।

लेकिन उन सबका एक ही जज़्बा था कि एक ऐसी व्यवस्था बनाई जाय जिससे सदियों की विदेशी ग़ुलामी से आज़ाद हो रहे देश को उसकी खोई हुई प्रतिष्ठा फिर से मिलने में मदद मिले। वे जानते थे कि आज़ाद हो रहा मुल्क अनेकताएं लिये हुए अत्यंत विशाल है और एक समानता वाली न्यायपूर्ण राज व्यवस्था ही सबको एक रख सकती है और सबके विकास की राह प्रशस्त कर सकती है। हम भारत के लोगों ने जब भारत को गणतंत्र घोषित करते हुए अपने आप को संविधान दिया तब उसका अर्थ यह भी था कि सबको संविधान के अनुशासन में रहना है। यह अनुशासन राज व्यवस्था के लिए था ताकि देश के नागरिक स्वतंत्रता की सांस ले सकें। लेकिन हमने अब तक यही पाया है कि संवैधानिक व्यवस्थाओं को किनारे लगाने में खुद शासन तंत्र तथा सभी राजनैतिक दल एक दूसरे से होड लेते रहते हैं। संविधान और कानून के अनुशासन से बचने के लिए कोई गली निकालना या उसकी पूरी तरह उपेक्षा करना अब किसी को भी परेशान नहीं करता है और न अनैतिक लगता है। जब यह कहा जाता है कि देश में लोकतंत्र कमजोर हो रहा है तब उसका आशय संविधान प्रदत्त लोकतांत्रिक संस्थाओं के क्षरण से ही होता है। राजस्थान में इसका भयावह रूप देखने को मिलता है। सच तो यह है कि यह प्रदेश, जो देशी रियासतों के विलय से बना, कभी अपने सामंती चरित्र से बाहर नहीं निकल पाया। उसी का नतीजा है कि लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं के उत्तरोत्तर विकास की जगह उनके स्थापित होने के साथ ही उनके दरकने का सिलसिला चालू हो गया। राज्य विधानसभा के पिछले कार्यकाल में इन्हीं की झलकें देखीं गईं। आज़ादी की जंग के दौरान बिजौलिया किसान आंदोलन के प्रणेता विजय सिंह 'पथिक' को जयपुर के बाबा हरिश्चद्र मार्ग पर एक इमारत के चौथे माले के एक छोटे कमरे में रोटी पकाते देखने वाले तब के युवा पत्रकार प्रवीण चंद्र छाबड़ा ने उनसे जब पूछा कि वह भूपसिंह कहां है जो अंग्रेजों और सामंतों के खिलाफ दहाड़ता था? तो जवाब मिला कि अब किससे लडूं, अपनों से? जन्म पर 'पथिक' का नाम भूपसिंह रखा गया था। आजादी के उस जांबाज योद्धा ने युवा पत्रकार से कहा था एक बोतल का नशा कितना होता है जानता है? सत्ता तो न जाने कितनी बोतलों का नशा होता है! नई सरकार के के लोग भी इस नशे में न डूब जाएं यह अपेक्षा राज्य के लोग इसलिए भी करेंगे कि चुनाव प्रचार के दौरान उस नेता ने अपने भाषणों में यह गारंटी दी है जिसके चेहरे पर भारतीय जनता पार्टी ने विधानसभा का चुनाव लड़ा। हाल के दशकों में विधानसभा की बैठकों की संख्या निरंतर घटने का चलन हो गया है। अब कानूनों पर विचार करने के लिए विधानसभा में प्रमुख रूप से काम नहीं होता और सदन के सत्र हंगामा भरे रहने के लिए शापित हो गये हैं। वहां अब लोक कल्याण के मुद्दों पर कोई गंभीर और सार्थक चर्चाएं नहीं होती। सच तो यह है कि विधायिका के काम कार्यपालिका करने लगी है। जो व्यवहार में ख़राब बात है। विधायिका के नियंत्रण में गिरावट हमारी राजनीतिक संस्कृति की बीमारी को दर्शाती है। जब सामूहिक जिम्मेवारी वाली व्यवस्था का महत्व न रह जाए और सभी फैसले केंद्रित सत्ता करने लगे तब लोकतंत्र दरकने लगता है जिसे राजस्थान के लोगों ने पिछले पांच वर्षों में देखा। नया निजाम इससे सबक लेगा ऐसी भी अपेक्षा करना व्यर्थ नहीं है। विधायक सत्ता की ताकत चाहने लगे हैं ताकि वे अपने को और अपनों को उपकृत कर सकें। इसीलिए राजनेता संविधान और कानूनों की सीमाओं को लांघने के लिए तत्पर रहने लगे हैं। राजनेता विशिष्ट दलगत लक्ष्यों को हासिल करने के लिए प्रमुख संवैधानिक सिद्धांतों को ताक में रख देने में एक क्षण नहीं लगाते है। संविधान उच्च कानून का एक रूप है, जो दिन-प्रतिदिन की राजनीति के दबाव से ऊपर होता है। मगर हमारे यहां दोनों तेजी से आपस में जुड़ गए हैं, प्रमुख राजनेता संविधान की व्याख्या उस तरीके से करने की कोशिश करने लगे हैं जो उनके एजेंडे के अनुकूल हो। नया शासन इससे बचे यह भी आम जन की अपेक्षा होगी। भले ही संसदीय लोकतंत्र उच्च जीवन स्तर, सामाजिक सुरक्षा और संरक्षित वातावरण की शत प्रतिशत गारंटी नहीं है, किन्तु वह एक ऐसी प्रक्रिया जरूर है जिससे महत्वपूर्ण मुद्दों पर आम सहमति से बेहतर नीतियां तय की जा सकती हैं और उनके परिणाम हासिल किये जा सकते हैं। यह तभी संभव है जब कुलीनतंत्रीय राजनीतिक व्यवस्था से बाहर निकला जाए तभी आम जन को लगेगा कि राज उसका आया है।

अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

जोधपुर पोलो-2023: 61 कैवलरी ने एच.एच. महाराजा ऑफ जोधपुर कप (8 गोल) टूर्नामेंट फाइनल जीता

ध्रुवपाल गोदारा ने बेहतरीन खेल का प्रदर्शन कर टीम को कप दिलाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया

जोधपुर, (कासं)। जोधपुर पोलो एवं इक्यूस्टेरियन इंस्टीट्यूट, जोधपुर के तत्वावधान में महाराजा गजसिंह स्पोर्ट्स फाउण्डेशन पोलो मैदान, एयरफोर्स रोड, पाबूपुरा में चल रहे

■ **आज से शुरु होगा राजपूताना एण्ड सेन्ट्रल इण्डिया कप टूर्नामेंट**

24वें जोधपुर पोलो सीजन 2023 में मंगलवार को दोपहर तीन बजे एच.एच. महाराजा ऑफ जोधपुर कप (8 गोल) टूर्नामेंट का फाइनल पोलो हेरिटेज व 61 कैवलरी-रॉयल इनफील्ड के बीच दोपहर तीन बजे खेला गया जिसमें कैवलरी टीम ने हेरिटेज टीम को पांच के मुकाबले नौ गोल कर चार गोल के अन्तर से हराते हुए कप अपने नाम कर लिया। कैवलरी के ध्रुवपाल गोदारा ने बेहतरीन सधे हुए खेल का प्रदर्शन कर अपनी टीम को कप दिलाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। मैच समाप्ति पर विजेता टीम को डॉ. नम्रता मिश्रा ने कप व ट्रॉफियां प्रदान की।

जोधपुर पोलो एवं इक्यूस्टेरियन इंस्टीट्यूट, जोधपुर केसचिव इन्द्रजीत सिंह नाथावत ने बताया कि पोलो हेरिटेज टीम की ओर से खेलते हुए टीम के चार हैण्डीकेप के खिलाड़ी सैय्यद शमशेर अली ने पहले चक्कर में दो गोल किए। योगेश्वर सिंह ने चौथे चक्कर में एक गोल किया। इस टीम द्वारा तीसरे चक्कर में कोई गोल नहीं किया गया। मुकाबले में 61 कैवलरी-रॉयल इनफील्ड के तीन हैण्डीकेप के वरिष्ठ खिलाड़ी ध्रुवपाल गोदारा ने अपने सदाबहार प्रदर्शन को दोहराते हुए कुल सात गोल कर विपक्षी टीम को कड़ी टक्कर दी। उन्होंने दूसरे व चौथे चक्कर में दो-दो गोल व तीसरे चक्कर में तीन गोल किए। तीन हैण्डीकेप के साथी खिलाड़ी अंगद कलान ने पहले चक्कर में व दो हैण्डीकेप के कर्नल विशाल चौहान ने चौथे चक्कर में एक गोल किया। मैच की कॉमेन्ट्री राजवी शैलेन्द्रसिंह ने की।

एच.एच. महाराजा ऑफ जोधपुर कप (8 गोल) टूर्नामेंट में फाइनल मैच के विजेताओं को ट्रॉफी प्रदान की।

मैच के अम्पायर अर्जेन्टीना के निकोलस स्कोर्टीचीनी व दक्षिण अफ्रीका के रोडनी ज्योफरी गुटरिज रहे जबकि रैफरी लांस वाटसन थे। मैच के दौरान पूर्व सांसद नारायणसिंह माणकलाव, मेजर जनरल नरपतसिंह राजपुरोहित वीएसएम, कर्नल गिरेन्द्रसिंह, महाराजा मदनसिंह, राजेन्द्रसिंह, हर्षवर्धनसिंह भांवरी, दिग्विजयसिंह भांवरी, वीर विजयसिंह अनेक देशी-विदेशी पोलो प्रेमी मैदान में उपस्थित थे। पोलो हेरिटेज टीम के खिलाड़ी सैय्यद शमशेर अली की घोडी बरफी को बेस्ट पौनी अवार्ड से सम्मानित किया गया, जिसके तहत उन्हें सेडल प्रदान की गई।

सचिव इन्द्रजीत सिंह नाथावत ने बताया कि बुधवार से राजपूताना एण्ड सेन्ट्रल इण्डिया कप (8 गोल) टूर्नामेंट शुरु होगा। पहले दिन दो मैच खेले जाएंगे। पहला मैच दोपहर 1.45 बजे पूल 'ए' में 61 कैवलरी-रॉयल इनफील्ड व इण्डियन नेवी के बीच व दूसरा मैच दोपहर 3 बजे पूल 'बी' में जोधपुर-जयपुर व वी पोलो-चान्दना पोलो के बीच खेला जायेगा। उन्होंने बताया कि दोपहर 3 बजे खेला जाने वाला मैच इण्डियन एयरफोर्स लोंगेवाला कप के प्रदर्शन मैच के तहत खेला जायेगा। इस दौरान पोलो ग्राउण्ड में भारतीय वायुसेना द्वारा एयर शो का बेहद ही आकर्षक प्रदर्शन किया जायेगा।

तकनीकी कार्य के कारण रेल सेवाओं का मार्ग बदला

अजमेर-बान्द्रा टर्मिनस एक्सप्रेस परिवर्तित मार्ग पर चलेगी

अजमेर, (कासं)। पश्चिम रेलवे द्वारा रतलाम मण्डल पर यात्री सुविधाओं की बढ़ोतरी के क्रम में तकनीकी कार्य किया जा रहा है। इस कार्य के कारण इस खण्ड की कुछ रेल सेवाएं प्रभावित रहेगी।

उत्तर पश्चिम रेलवे के मुख्य जन सम्पर्क अधिकारी कैप्टन शशि किरण के अनुसार उपरोक्त कार्य के कारण उत्तर पश्चिम रेलवे पर संचालित रेल सेवाएं जिनका मार्ग परिवर्तित किया जा रहा है वे परिवर्तित मार्ग में ब्यावर, मारवाड़ जंक्शन एवं आबू रोड स्टेशन पर ठहराव करेंगी।

मार्ग परिवर्तित रेलसेवाएं :-गाड़ी संख्या 12996, अजमेर-बान्द्रा टर्मिनस एक्सप्रेस रेलसेवा जो दिनांक 19, 21 व 23 दिसम्बर 2023 को अजमेर से रवाना होगी वह निर्धारित मार्ग चित्तौड़गढ़-रतलाम-वडोदरा के स्थान पर परिवर्तित मार्ग वाया अजमेर-पालनपुर-अहमदाबाद-वडोदरा होकर

■ **परिवर्तित मार्ग में ब्यावर, मारवाड़ जंक्शन एवं आबूरोड स्टेशन पर करेंगी ठहराव**

संचालित होगी। गाड़ी संख्या 12995, बान्द्रा टर्मिनस-अजमेर एक्सप्रेस रेलसेवा जो 20, 22 व 24 दिसम्बर 2023 को बान्द्रा टर्मिनस से रवाना होगी वह निर्धारित मार्ग वडोदरा-रतलाम-चित्तौडगढ़ के स्थान पर परिवर्तित मार्ग वाया वडोदरा-अहमदाबाद-पालनपुर-अजमेर होकर संचालित होगी। गाड़ी संख्या 82654, जयपुर-यशवन्तपुर एक्सप्रेस रेलसेवा जो 23 को जयपुर से रवाना होगी वह निर्धारित मार्ग चित्तौड़गढ़-रतलाम-वडोदरा के स्थान परिवर्तित मार्ग वाया अजमेर-पालनपुर-अहमदाबाद-वडोदरा होकर संचालित होगी। गाड़ी संख्या 82653, यशवन्तपुर -जयपुर एक्सप्रेस रेलसेवा जो 21 दिसम्बर 23 को यशवन्तपुर से रवाना होगी वह निर्धारित मार्ग वडोदरा-रतलाम-चित्तौडगढ के स्थान पर परिवर्तित मार्ग वाया वडोदरा-अहमदाबाद-पालनपुर-अजमेर होकर संचालित होगी। गौरतलब है कि उपरोक्त रेल सेवाएं परिवर्तित मार्ग में ब्यावर, मारवाड़ जंक्शन एवं आबूरोड स्टेशन पर ठहराव करेगी।

मालपुरा के कस्तूरबा आवासीय विद्यालय में छात्राओं के भविष्य से हो रहा खिलवाड़

पेन और किताब उठाने की उम्र में छात्राओं के सिर पर रखा जा रहा ईंधन का बोझ

मालपुरा, (निसं)। एक ओर जहां केन्द्र व राज्य सरकार बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए आवासीय विद्यालय खोलने सहित बालिकाओं के लिए अनेक योजनाएं शुरू कर करोड़ों रूपये पानी की तरह बहा रही है। वहीं दूसरी ओर मालपुरा शहर में संचालित कस्तुरबा बालिका आवासीय विद्यालय में शिक्षा ग्रहण करने के लिए रह रही मासूम बालिकाओं के भविष्य से खिलवाड़ किये जाने का मामला सामने आया है। मामले के अनुसार शहर के रेलवे स्टेशन सरकारी अस्पताल के पास संचालित कस्तुरबा आवासीय बालिका विद्यालय में ग्रामीण अंचल में रहने वाली गरीब व मध्यम वर्ग की छात्राओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा ग्रहण करवाने के लिए परिजन दाखिल करवा अपनी बेटी के भविष्य को लेकर दिल में कई बड़े सपने सोचते हैं।

आवासीय विद्यालय प्रशासन अभिभावकों के इन सपनों व विद्यालय में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा ग्रहण करने का सपना लेकर दाखिला लेने वाली छात्राओं के भविष्य को नजर अंदाज कर अपनी सुविधा व मनमर्जी से अन्य कार्यों में व्यस्त कर उनके भविष्य से खिलवाड़ करने में कोई कसर नहीं छोड़ रहे हैं।

मालपुरा में कस्तूरबा बालिका आवासीय विद्यालय की छात्राओं के भविष्य से खिलवाड हो रहा है।

आवासीय विद्यालय प्रशासन की घोर लापरवाही व भारी अनियमितता तब उजागर हुई जब आधा दर्जन छात्राएं विद्यालय समय में कक्षा में बैठ शिक्षण कार्य व शिक्षा ग्रहण करने के बजाय अस्पताल रोड से अपने सिर पर गौबर के कंडों से भरे प्लास्टिक के कट्टों का वजन अपने सिर पर रखकर आवासीय विद्यालय की और आती देखी गई। इस माजरे को मीडियाकर्मियों ने देखा तो इन मासूम बालिकाओं से सिर पर ईंधन का बोझ रखने का कारण जानने पर इन छात्राओं ने जवाब दिया कि मैडम ने कहा है कि इन कट्टों को सिर पर रख कर हॉस्टल ले चलो। बस इससे आगे इन मासूम छात्राओं के पास और कोई जवाब नहीं मिल पाया।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

राशिफल 20 दिसम्बर 2023

मागशीर्ष मास शुक्ल पक्ष, अष्टमी तिथि, बुधवार, विक्रम सम्वत 2080, उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र रात्रि 10.58 तक, व्यतिपात योग दिन 3.56 तक, बव करण दिन 11.15 तक, चन्द्रमा मीन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति - सूर्य-धनु, चन्द्रमा-मीन, मंगल-वृश्चिक, बुध-धनु, गुरू-मेष, शुक्र-तुला, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में संचार करेगा।

श्रेष्ठ चौघडिया - लाभ-अमृत सूर्योदय से 9.49 तक, शुभ 11.07 से 12.24 तक, चर 2.59 से 4.16 तक, लाभ 4.16 से सूर्यास्त तक

राहुकाल - 12.00 से 1.30 तक, सूर्योदय 7.15 सूर्यास्त 5.33

मेष
घर गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भाग दौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

वृष
आर्थिक-वित्तीय मामलों में सतुलन बनाये रखना ठीक रहेगा। संभावित स्रोत से धन प्राप्त हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों में व्यवस्तता बनी रहेगी।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क
धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। नवीन कार्य के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।

सिंह
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलंब हो सकता है।

कन्या
परिवार में आपसी सहयोग समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे।

तुला
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। किसी भी कारण से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेगी।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु
परिवार में वाद-विवाद बड़ सकते हैं। पारिवारिक कार्यों के कारण भाग दौड़ रहेगी। परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। अनावश्यक धन खर्च होगा।

मकर
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिचितों रिश्तेदारों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य में उचित सफलता मिलेगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

मीन
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल आत्मविश्वास बडेगा। महत्वपूर्ण योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है।